समाज विकास

मूल्य : १० रुपये प्रति, वार्षिक : १०० रुपये

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन का मुखपत्र

कौस्तुभ जयंती वर्ष
अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन
75
ALL INDIA MARWARI FEDERATION
PLATINUM JUBILEE YEAR
1935-2010

▸ जून २०१० ▸ वर्ष ६० ▸ अंक ०६

पश्चिम बंग प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन
व सीकर नागरिक परिषद के संयुक्त तत्वावधान में

शिक्षा महाकोष की स्थापना हो – रूँगटा

१०वीं व १२वीं की परीक्षा में बेहतर अंक पानेवाले छात्र–छात्राओं को सम्मानित किया गया।

स्थायी समिति की बैठक :

स्थायी समिति के सदस्यों की षष्ठम बैठक

संगोष्ठी :

आडम्बर और दिखावा – समाज के लिए अभिशाप

wonder images

Leading solvent printing unit for outdoor & indoor ad.

- Crystal clear digital printing with vutek machine, on Flex, SAV, One way vision, UK Media, Mesh, Lamination, Canvas, etc.
- 40,000 sq ft per day production capacity.
- No compromise in quality.

Wonder images Pvt. Ltd.

2 Brabourne Road, Kolkata - 700 001
Ph : 2225 1862/3/4/5, 9830425990, Fax : 91-33-2225 1866
email : wonder@cal2.vsnl.net.in

समाज विकास

✦जून २०१० ✦वर्ष ६० ✦अंक ६ ✦एक प्रति–१० रु. ✦वार्षिक–१०० रु.

अनुक्रमणिका

क्रमांक	पृष्ठ संख्या
चिट्ठी आई है	४
वर्षिक सभा की सूचना	६
अध्यक्षीय – श्री नन्दलाल रूंगटा	७
अपनी बात – शम्भु चौधरी	८
जंतर–मंतर : अमेरिका की डायरी – सीताराम शर्मा	९
समाज सेवा–दशा और दिशा – रामअवतार पोद्दार	१०
भंवरमल सिंघी समाज सेवा पुरस्कार	११
सीताराम रुँगटा राजस्थानी भाषा साहित्य पुरस्कार	११
संगोष्ठी: आडम्बर और दिखावा–समाज के लिए	१२
स्थायी समिति के सदस्यों की षष्ठम बैठक	१४
महामंत्री की रिपोर्ट	१६
हमारी नदियां गन्दे नाले बन रही है – त्रिलोकी दास खण्डेलवाल	१९
कविता – परशुराम तोदी 'पारस'	२१
ग़ज़ल – सत्यनारायण बीजावत	२१
हमारा सार्वजनिक जीवन–स्व. भंवरलाल सिंघी	२३
मारवाड़ी समाज अपनी चिन्तनधारा बदले – स्व. ईश्वरदास जालान	२५
समीक्षा : कैकेयी के चरित्र के साथ न्याय की कोशिश	२७
शिक्षा महाकोष की स्थापना हो – रुँगटा	२९
कविता : मैं मैं हूँ – विजया शर्मा	३०
ग़ज़ल – नरेश हमिलपुरकर	३१
राजस्थान परिषद ने मनाया ४७१वां प्रताप जयन्ती समारोह	३१
'शिक्षा गौरव' सम्मान से सम्मानित हुए मेधावी छात्र	३२
महाराजा अग्रसेन भवन का उद्घाटन समारोह संपन्न	३२
पार्षदों का अभिनन्दन	३३
मुख्यमंत्री तरुण गोगोई अपने शब्दों को वापस लें	३३
श्रद्धांजलि : भजन सम्राट राजेंद्र जैन नहीं रहे	३४

स्वत्वाधिकारी :

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन ✦ १५२बी, महात्मा गाँधी रोड, कोलकाता–७००००७

फोन : ०३३–२२६८ ०३१९ ✦ E-mail: samajvikas@gmail.com

के लिए श्री भानीराम सुरेका द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित तथा

ऐभल प्रिंटर्स प्रा.लि., ४५बी, राजाराम मोहन राय सरणी, कोलकाता–७००००९ में मुद्रित

✦संपादक : नंदकिशोर जालान ✦ कार्यकारी संपादक : शंभु चौधरी

प्रकाशित रचनाओं से सम्पादकीय सहमति अनिवार्य नहीं है।

चिट्ठी आई है :

सुन्दर अंक के लिए बधाई!

समाज विकास का मार्च १० अंक देखा, अच्छा लगा। महाप्रज्ञ ससाक्षात्कार, आखिर क्या है? समाज सेवा, आधुनिक बैंकिंग–मारवाड़ी समाज की देन और क्या हो विवाह की आयु लेख अच्छे बन पड़े हैं। आपकी पत्रिका समाज के क्रिया कलापों तक सीमित न होकर एक बहुआयामी पत्रिका बनती जा रही है। राजस्थानी रचनाओं का अभाव खटकता है। राजस्थानी लेखकों से सम्पर्क किया जा सकता है। अच्छी रचनाओं के लिए पारिश्रमिक की व्यवस्था भी की जा सकती है। इतने सुंदर अंक के लिए बधाई।

लोहिया के विचारों से प्ररेणा ले समाज

समाज विकास (अप्रैल १०) अंक में रुँगटाजी का लेख लोहिया के विचारों से प्ररेणा ले समाज! वास्तव में विचार एवं प्ररेणादायी है। आपने ठीक ही कहा है कि हमें गर्व है कि लोहिया मारवाड़ी थे, पर इनसे प्रेरणा ले हमें भी राजनीति में सक्रियता निभानी है–यह शब्द आंखें खोल देने वाले हैं। अनेक लोग मारवाड़ियों की आर्थिक मदद से एम.पी. एम.एल.ए. बनते आये हैं और बन रहे है। मारवाड़ी समाज राजनीति को लफड़ा बता कर उससे दूर होते जा रहे हैं। यदि समाज का हित चिन्तन करके समाज में आदर्श स्थापित करना है तो क्यों नहीं हम राजनीति में खुले आकर समाज का हित करें। वैसे भी समाज पर हम लाखों खर्च करते हैं फिर क्यों नहीं मारवाड़ी समाज सक्रिय भागीदार बन कर समाज का कल्याण करते। ''थे के काम करो हो'', यह प्रश्न भूलकर ''थे भी यो काम करो'' का नारा लगाना ही समाज के लिए हितकर है।

– नागराज शर्मा
बिनजारो प्रकाशन, पिलानी, राजस्थान

मारवाड़ी समाज की लोकप्रियक पत्रिका

आपने जानकारी के लिए यो पत्र आपके पास भेज रह्यो हो। मारवाड़ी समाज की लोक प्रियक पत्रिका को प्रकाशन पुनः संचालन कर दियो गह्यो है सो आप से नम्रनिवेदन है की समाज को कोई श्री समाचार धार्मिक, सामाजिक, लेख, चुटकुला या आपको विचार म्हारी कार्यालय न समय पर भेजन को कष्ट करोगा। जिसस म्हे समय पर उसको प्रकाशन कर सका। या पत्रिका समाज की मारवाड़ी भाषा में नेपाल से प्रकाशित करी जावह साथ साथ आपस हर्दिक अनुरोध है की संघ संस्था या व्यक्ति इसको सदस्य बननो चाहव है तो कृपा म्हारे कार्यलय ने जानकारी कराने को कष्ट करोगा जिससे इसके संचालन में आर्थिक सहयोग प्राप्त होतो रहवे।

मारवाड़ी मंच सप्ताहिक
महावीर, रोड, बीरगंज–7, नेपाल

सूचना

हमें खेद के साथ सूचना देनी पड़ रही है कि वर्ष 2007 अप्रैल से मार्च 2008 के पूर्व का जिन विशिष्ट सदस्यों का वार्षिक शुक्ल बकाया चला आ रहा है उन सदस्यों के नाम सदस्या सूची से हटाया जा रहा है अतः सभी सदस्यों से निवेदन है कि अपनी सदस्यता का नवीनीकरण अति शीघ्र करा लेवें।

नोट :
समाज विकास के प्रत्येक अंक में सदस्यों के नाम के साथ जहां तक का शुक्ल सम्मेलन को प्राप्त हुआ है वह लिखा रहता है। – राष्ट्रीय महामंत्री

चिट्ठी आई है :

विश्वम्भरजी नेवर तथा रतनजी शाह बोल्या सम्पादक सुयोग्य राखो

हिन्दुस्थान क्लब री राष्ट्रीय कार्यकारिणी री बैठक में विश्वम्भरजी नेवर तथा रतनजी शाह बोल्या **''सम्पादक सुयोग्य राखो वेतन भोगी। यूं ही कार्यालय रा कर्मचारी भी दूसरा राखो दक्ष।''**

किन्तु आजकाल सम्पादक १५००० और कर्मचारी १०००० रु० मासिक बिना मिलै कोनी। इण अर्थाभाव में भी पूज्य श्री नन्द किशोर जी जालान, समाज विकास नै ६०–७० वर्ष चलायो। ओ साहस, न तो विश्वम्भर जी में हैं तथा ना ही रतनजी शाह में। हाँ, विश्वम्भरजी नेवर, व्यक्तिगत छापो 'छपते–छपते' तथा ताजा टी.वी. चोखा चलावै है किन्तु आ योग्यता, समाज–विकास चलाणै में सफल नहीं हो सकै कारण संस्था में, डिक्टेटरशिप चालै कोनी। डिक्टेटरशिप में रतनजी शाह भी, नेवरजी ज्यूँ ही लाडेसर (पखवाड़ियो) चोखो चलायो थो। पछै दूजी संस्थावां में रहकर, चला कोनी सक्या। संस्था रै तथा व्यक्ति रै सफल होवणै में रात–दिन रो अन्तर रैवै।

राम गोपाल जी बागला बोल्या ''समाज–विकास रो कागज अर छपाई ठीक कोनी।'' अम्बु शर्मा रै विचार में दोनूं ही उत्तमोत्तम है। नेवर जी बोल्या विषय वस्तु रै चयन को स्तर घटिया है जिणरो समर्थन रतनजी शाह भी कर्यो। अम्बु शर्मा रो मत है कै घटिया कोनी किन्तु इतणा कमती पृष्ठ री पत्रिका में विषय चयन रो अवकाश ही कोनी। जिण हेतु रतनजी शाह ठीक बोल्या 'पृष्ठ संख्या बढ़ावो'। सो यदि पृष्ठ संख्या ३४ अथवा ४२ अथवा ५० रै स्थान पर ६६ अथवा ८२ अथवा ९८ कर दी जावै अर सभी रचनावां पर चोखो 'पत्रं, पुष्पं' दियो जावै तो विषय स्तर में समाज विकास री बरोबरी करणियो, दूजो पत्र ही नहीं ल्हादैगो सो तीन प्रस्ताव आया :

(१) सम्पादक वेतनभोगी राखणो।

(२) कार्यालय में क्लर्क, महंगा राखणां।

(३) पत्रिका रा पृष्ठ, दुगुणा करणा।

जणां तो एक–दो मोटरकार भी, कार्यालय रै नीचै ही खड़ी रैवणी चाईजै, कर्मचारियां री संख्या भी तीन गुणी करणी चाईजै। जिया नेवरजी कनै १०० कर्मचारी है। प्रेस भी निजी लगाणी चाइजै।

हाँ, मात्र आलोचना करणौ री टेम है, इण हेतु कै सम्मेलन रा वर्तमान काम करणियाँ पदाधिकारियां ने नीचो दिखावां।

– अम्बु शर्मा, सम्पादक
'नैणसी', राज. मासिक
205, S.K. Deo Road
Sri-Bhoomi, Kolkata-48

प्रचारक चाहिए

सम्मेलन में कार्य करने के लिए प्रचारक की जरूरत है। इच्छुक व्यक्ति अपना आवेदन पत्र महामंत्री के नाम से भेज सकते हैं। – व्यवस्थापक

Telegram : APKASAMAJ ESTD. 1935 Phone : (033) 2268-0319
Fax : (033) 2225-1866, 2242-9813

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन
ALL INDIA MARWARI FEDERATION

(Regd. under W.B. Societies Act XXVI of 1961)
152-B, Mahatma Gandhi Road, Kolkata - 700 007

अध्यक्ष	महामंत्री	संयुक्त महामंत्री	संयुक्त महामंत्री	कोषाध्यक्ष
नन्दलाल रुंगटा	रामअवतार पोद्दार	ओम प्रकाश पोद्दार	संजय हरलालका	आत्माराम सोंथलिया

उपाध्यक्ष : हरिप्रसाद कानोड़िया, राज के. पुरोहित, गणेश प्रसाद कंदोई, राम बिलास साबू, ओम प्रकाश खण्डेलवाल, बद्रीप्रसाद भीमसरिया

सूचना

दिनांक : २९ जून २०१०

सभी सदस्यों की सेवा में

प्रिय महोदय,

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन की वार्षिक साधारण सभा आगामी शनिवार ३१ जुलाई २०१० को दोपहर ३. ३० बजे मर्चेण्ट चेम्बर ऑफ कामर्स हॉल, १५ बी, ओल्ड कोर्ट हाउस स्ट्रीट, कोलकाता में निम्नलिखित विषयों पर विचारार्थ आयोजित की गई है।

सम्मेलन सभापति श्री नन्दलाल रुंगटा सभा की अध्यक्षता करेंगे।

आपकी उपस्थिति प्रार्थित है।

भवदीय

रामअवतार पोद्दार
राष्ट्रीय महामंत्री

संलग्न :

१. वित्तीय वर्ष २००९ – १० का आय – व्यय का लेखा – जोखा, लेखा परीक्षक द्वारा पारित किया हुआ।

विचारार्थ विषय :

१. गत बैठक की कार्यवाही स्वीकृत करना।
२. गत वर्ष के किया – कलाप का महामंत्री द्वारा प्रतिवेदन।
३. २००९ – १० के आय – व्यय का लेखा तथा संतुलन पत्र को स्वीकृत करना।
४. लेखा परीक्षक की नियुक्ति।
५. विविध अध्यक्ष की अनुमति से।

सम्मेलन भवन : २५, राजा राममोहन राय सरणी (अमहर्स्ट स्ट्रीट), कोलकाता - ७०० ००९, दूरभाष : (०३३) २३५०-९९२९

अध्यक्षीय :

माँस-मदिरापान का बढ़ता प्रचलन

श्री नन्दलाल रूंगटा, राष्ट्रीय अध्यक्ष
अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन

जैसे–जैसे समाज की जरूरतें बदलती हैं, सामाजिक ढाँचे में भी बदलाव आता जाता है। मारवाड़ी समाज एक समय, विदेश भ्रमण अथवा विदेशों में रहकर शिक्षा ग्रहण करना एक प्रकार से सामाजिक अपराध मानता था। समाज में सनातनी विचार धारा को मानने वालों की सोच थी, कि इससे समाज में मांसाहारी प्रवृति का विकास होगा जो समाज के शाकाहारी जीवन में घुलकर समाज के ताने–बाने से छेड़छाड़ करेगा।

यह सोच उस समय की थी जब स्व. काली प्रसाद खेतान उच्च शिक्षा प्राप्त करने के लिए विदेश जा रहे थे। नतीजा सामने था समाज के लोगों ने लामबन्द होकर उनको जाति बहिष्कार कर दिया।

परन्तु आज समाज के युवक एवं युवतियों में धड़ल्ले से माँस–मदिरापान का प्रचलन बढ़ते जा रहा है न तो हम इस पर कोई प्रतिबन्ध लगा पा रहें हैं, और ना ही इस दिशा में कुछ कर पा रहे हैं।

हमें याद आता है कि जब दादा–दादी, नाना–नानी को घर में प्याज की गंन्ध सूंघ लेते तो, खाना तक नहीं खाते। धीरे–धीरे मारवाड़ी समाज में प्याज का प्रचलन बढ़ता गया, अब बिना प्याज का खाना बोलकर बनवाया जाता है अर्थात प्याज हमारे घरों में आम बात हो गयी। इसी प्रकार लहसून भी धीरे–धीरे हमारे समाज का खाद्य पदार्थ बनते जा रहा है। परन्तु समाज की शुद्ध शाकाहारी व्यवस्था आज भी बरकरार है। धीरे–धीरे दुनियाँ के कई विकसित देश–मारवाड़ी समाज के इस गुण का रहस्य जानने का प्रयास कर रहे हैं और हमारा समाज मांसाहारी बनते जा रहा है तथा मदिरा का प्रचलन इतना अधिक तथा सार्वजनिक हो गया है कि शादी–विवाह समारोह में भी मदिरा पान होने लगा है। समाज के लोगों को सोचना होगा कि हम आडम्बर, फिजूलखर्ची के साथ मदिरा पान को किस तरह रोक पाने में सक्षम हो सकते हैं।

मदिरा पान हमारे संस्कृति में नहीं है तथा यह कोई उपयोगी पेय भी नहीं है इसके सेवन से मस्तिष्क के अलावा स्वास्थ पर भी प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। परिवार की शान्ति तो भंग होती हीं है। साथ हीं यह विलासिता का परिचायक भी है।

मदिरा पान हमारे संस्कृति में नहीं है तथा यह कोई उपयोगी पेय भी नही है इसके सेवन से मस्तिष्क के अलावा स्वास्थ पर भी प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। परिवार की शान्ति तो भंग होती ही है। साथ ही यह विलासिता का परिचायक भी है।

आज समाज शिक्षित हुआ है। शिक्षित समाज का सपना हम देख भी रहे हैं, परन्तु साथ ही हमें यह देखना होगा कि इस शिक्षा से समाज में व्याप्त कुरीतियों को न सिर्फ समाप्त किया जा सके, इसके साथ–साथ हम हमारी सामाजिक धरोहर जैसे शाकाहारी, धार्मिक सामाजिक प्रवृति में किस तरह विकास ला सकें।

धन के फिजूलखर्ची समाज के एक वर्ग को अंधा बना दिया हैं। हम एक दूसरे से कम नहीं होकर एक दूसरे से आगे निकलने के प्रयास में समाज की संस्कारों की संपदा कहीं समाप्त न कर दें। इस पर हमें सोचने की जरूरत है कि इस प्रकार की प्रवृति को किस प्रकार बढ़ने से रोका जा सके। सम्मेलन इस दिशा में पहल करने के लिए सदा तत्पर रहेगा।◆

अपनी बात :

असम : गोगोई की टिप्पणी

– शम्भु चौधरी

पिछले माह असम के मुख्यमंत्री श्री तरुण गोगोई ने अपनी सरकार के दूसरे कार्यकाल के चौथे वर्षपूर्ति के अवसर पर मारवाड़ी समाज को आड़े हाथ लेते हुए असम के व्यापारियों को उग्रवादी दलों को धन मुहैया कराने की बात कहते हुए फैंन्सी बाजार के व्यापारियों के लिए काले व्यापारी शब्द का प्रयोग करते हुए कहा कि मंहगाई के लिए सीधे तौर पर यही काले व्यापारी जिम्मेदार हैं। आपने अपने गुस्से का इजहार करते हुए कहा कि ये लोग कांग्रेस को भी वोट नहीं देते।

यदि राज्य में 80 प्रतिशत व्यापार भी ''वेट कर प्रणाली'' द्वारा संचालित है तो आपकी सरकार सीधे तौर पर कालेबाजारी के लिए जिम्मेदार है न कि असम के व्यापारी। खाद्य पदार्थों के दाम करने कम करने के लिए भारत सरकार पर दबाव डालें तो आपकी हिम्मत की दाद दूँगा।

आदरणीय मुख्यमंत्री महोदय जी,

शायद आप भूल गए होंगे कि आज आप जिस कांग्रेस का दम भर कर इस तरह का आरोप लगा रहें हैं इसको पूरे भारतवर्ष में सींचने का कार्य इसी मारवाड़ी समाज ने दिया था। जब कांग्रेसी असम में उल्फा के आंतक से भयभीत होकर बिल में छिपे हुए थे तो मारवाड़ी समाज ने आगे बढ़कर अपने सीने में गोली खाई थी। जिस उग्रवाद को धन देने की बात आप कर रहें हैं इसका अर्थ है कि असम में आपकी सरकार, व्यापारियों को सुरक्षा देने में पूर्णत: असफल रही है, नहीं तो कोई भी व्यापारी किसी भी उग्रवादी संगठन को धन नहीं देगा इसका अर्थ है आपका प्रशासन–तंत्र पंगु हो चूका है। शायद आप अपनी इसी कमजोरी को छुपाने के लिए व्यापारी वर्ग पर अपना दोष मंडने में लगे हैं। सत्ता की आड़ लेकर आप भले ही व्यापारियों को बुरा भला कह लें या अभद्र शब्दों का प्रयोग कर लें, परन्तु मुल्य वृद्धि सारे देश में हुई है इसमें सिर्फ असम के व्यापारियों को दोषी ठहराना गैर जिम्मेदाराना है। मेरा तो मानना है कि दिल्ली में बैठी आपकी केन्द्रीय सरकार के मंत्री भी इस कालाबाजारी में संलग्न हैं। मंहगाई सिर्फ असम में नहीं आई पूरे भारतवर्ष इसकी चपेट में है। आपके केन्द्रीय खाद्य मंत्री खुद मंहगाई बढ़ाने जैसे एक बार नहीं कई बार बयान दे चुके हैं एवं इस बात को लेकर संसद में बहस भी हो चुकी हैं। आपने मारवाड़ियों की तरफ इशारा करते हुए कहा कि ये व्यापारी उनको वोट भी नहीं देते, तो क्या आप यह कहना चाहते हैं कि यदि कालाबाजारी करने वाले आपको वोट देते तो वे सही है? शायद असम राज्य में भी **''वेट कर प्रणाली''** लागू है और आप अच्छी तरह से जानते हैं कि असम के व्यापारी किस दर पर माल क्रय कर रहे हैं एवं किस दर पर विक्रय। चूँकि **''वेट कर प्रणाली''** में पारदर्शिता बनी रहती है। यदि राज्य में ८० प्रतिशत व्यापार भी **''वेट कर प्रणाली''** द्वारा संचालित है तो आपकी सरकार सीधे तौर पर कालेबाजारी के लिए जिम्मेदार है न कि असम के व्यापारी। आपकी सरकार खाद्य पदार्थो के दाम कम करने के लिए भारत सरकार पर दबाव डालें तो आपकी हिम्मत की दाद दूँगा। बजाय व्यापारियों को बली का बकरा बनाने के। संभवत: कुछ अंश तक आपकी बात सही भी मान ली जाए तो इससे समस्त व्यापारी जगत को न तो कालाबाजारी कहा जा सकता और न ही किसी एक राजनैतिक दल का उसे सूचक माना जा सकता। असम की जनता आप से ज्यादा बुद्धिजीवी है। समझदार एवं योग्य है कि वे आपकी इस भड़काऊ बयान से कोई ताल्लुक नहीं रखना चाहती।

गोगई साहब आप एक नेक इंसान हैं, वोट बैंक की भूख से सत्ता प्राप्त नहीं होती, लोगों के दिल में जगह बनाऐंगे तो जनता आपको पुन: लायेगी अन्यथा इस छटपटाहट को हम आपके हार का सूचक मानते हैं।◆

अमेरिका की डायरी

सीताराम शर्मा, कौस्तुभ जयंती
अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन

विदेश की यह मेरी सबसे लम्बी यात्रा थी–अमेरिका में ४० दिनों का प्रवास। इससे पूर्व दर्जनों यात्राएं की जो किसी सम्मेलन में भाग लेने के लिये थी या व्यवासायिक। इस बार पूर्णतया पारिवारिक–पूरे परिवार के साथ। अवसर था अटलाण्टा निवासी अनुज पुत्री के लक्ष्मी स्वरुपी पुत्री के जन्म का।

यूं तो अमेरिका कई बार यात्रा करने का अवसर प्राप्त हुआ है लेकिन इस बार नजदीक से जानने समझने का मौका मिला। बैठकों–सेमिनारों में औपचारिक बातचीत से हटकर आम–अमेरिकी से विचार–विनिमय से बहुत कुछ जाना समझा।

अमेरिका अभी भी आर्थिक दबाब से जूझ रहा है। पुरानी चमक–दमक नहीं है। बेरोजगारी की दर में राष्ट्रपति ओबामा के प्रयासों के बावजूद कोई अधिक सुधार नहीं हुआ है। ओबामा के राष्ट्रपति निर्वाचन पर भी अमेरिका बंटा हुआ है। काले–गोरे के प्रश्न पर एक तरफ जहां ओबामा के राष्ट्रपति बनने से एक मलहम लगी है कहीं कहीं तीव्र प्रतिक्रिया भी है। ओबामा ने बहुत उम्मीदें जगाई है लेकिन उनकी लोकप्रियता में गिरावट हो रही है। अमेरिका विश्व में एक नम्बर सैनिक एंव आर्थिक ताकत की स्थिति बरकरार रखने के लिये कटिबद्ध है लेकिन आम अमेरिकी पूरी तरह आश्वस्त नहीं है उसे भय है कि अगले १०–१२ वर्षो में चीन सबसे बड़ी ताकत के रुप में उभर सकता है–यहां ओबामा की कमजोर एवं खुशामदी चीन नीति को आम अमेरिकी पसन्द नहीं कर पा रहा है।

भारत की बदलती तस्वीर एंव तरक्की की कहानी आम अमेरिकी की जुबान पर है। अन्य प्रवासी नागरिकों की तुलना में प्रवासी भारतीयों को आदर एवं सम्मान से देखा जाता है। संभवत: इसका मुख्य कारण है अमेरिका में अधिकतर भारतीय प्रवासी–शिक्षित प्रोफेशनल हैं। अमेरिकी अखबारों में भारत सम्बन्धी समाचार तो अभी भी बहुत कम है। जबकि चीन छाया रहता है, लेकिन भारत की जो भी खबरें छपती हैं उनमे अब महाराजा, हाथी एव सँपरों की कहानी नहीं होती।

मेरे प्रवास के दौरान मैंने अमेरिकी अखबारों एवं टीवी में पढ़ा–सुना कि भारत विश्व की दूसरी सबसे तेजी से बढ़ती आर्थिक व्यवस्था है। भारत अब विश्व का तीसरा क्रय शक्ति वाला देश है ५.२ बीलियन अमिरिकी डालर। भारत में २५०० इंजीनियरिंग कालेज हैं। भारत में अब १ लाख से अधिक करोड़पति एवं बहुत से अरबपति है। एक नाईजीरियन अमेरिकी टैक्सी ड्राइवर ने मुझसे कहा कि "भारत अब तीसरे विश्व का प्रगतिशील देश नहीं रहा है। भारत अब एक आर्थिक ताकत है।" एक अमेरिकन अर्थशास्त्री ने तो यहां तक कह डाला कि भारत २०२० में विश्व की सबसे बड़ी अर्थ व्यवस्था के रुप में उभरेगा। उसने कहा ओबामा को चीन के बजाय भारत से सम्बन्धों को महत्व देना चाहिये। भारत की आर्थिक प्रगति अमेरिका को ताकत प्रदान करेगी जबकि चीन उसे कमजोर करेगा। उसके अनुसार चीन डालर को कमजोर करना चाहता है।

प्रवासी भारतीयों की स्थिति के विषय में यह जानकारी चौकाने वाली थी कि अमेरिका की १० प्रतिष्ठित बहुराष्ट्रीय कम्पनियों के चैयरमैन भारतीय मूल के अमेरिकी है– अजय बंगा (मास्टरकार्ड विश्वव्यापी) फ्रांसिस डिसूजा (कागनिजेंट) संजय झा (मोटोरोला), सूर्या महापात्रा (क्वेस्ट डायगनोष्टिक) जय नागरकालती (सिगमा) शान्तनु नारायण (एडोव सिस्टम) इन्द्रा नूई (पेप्सीको) दिनेश पालिराड (हरमन इण्टरनेशनल) विक्रम पण्डित (सिटी ग्रुप) अभिषेक तालवलकर (एल.एस.आई कारपोरेशन)।

अमेरिका में मुझे भारतीय होने पर पहली बार गर्व का बोध हो रहा था।◆

समाज सेवा – दशा और दिशा

रामअवतार पोद्दार, राष्ट्रीय महामंत्री
अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन

भारत देश के हर छोटे–बड़े कस्बे और नगर में मारवाड़ी समाज द्वारा संचालित ऐसे संगठन सक्रियता से कार्य करते हुए मिलते हैं जिनका उद्धेश्य समाज का उत्थान और समाज की सेवा है। कुछ संगठन तो लम्बी अवधि से कार्य करते आ रहे हैं। उनके सदस्यों की संख्या भी सैंकड़ों और हजारों में है। वस्तुत संगठन के इस वृहद् स्वरूप के मूल में उसके सदस्यों की कर्मठता, समाज के प्रति आस्था, समर्पण भावना, एक जुटता तथा सामाजिक दायित्व बोध की समझ ही है। कदाचित् ऐसे संगठनों की नींव रखनेवालों तथा उसकी योजनाओं और उद्धेश्यों की पूर्णता में अपना निष्काम योगदान देने वाले उसके जागरूक सदस्यों के संस्कारों में यह भावनाएं ही रही होंगी कि–

ध्यैयनिष्ठ हो अगर समर्पण विनयपूर्ण हो प्रति पद।
सहज साधनमय जीवन हो राम कृपा हो सम्पद।।
मेवा खाने की न लालसा हो यदि अपने मन में,
सेवा का छोटा सा पौधा बन सकता है बरगद।।

समाज में किसी भी तरह की कोई आपदा आई हो, समाज का कोई सदस्य किसी तरह की परेशानी में घिरा हो, समाज में किसी तरह का अभाव हो उसके निराकरण के लिए संगठन का हर सदस्य तत्पर रहा है। ये संगठन लोकप्रिय इसलिए हुए कि इसकी योजनाओं में समय–समय पर समाज के निरिक्षण को वरियता दी गई। ऐसा तभी संभव होता है जब संगठन का प्रत्येक सदस्य अपने हृदय में इस अमृत वाक्य को आत्मसात करले कि–

मुझे तो इष्ट जन सेवा। सदा सच्ची भुवन सेवा।।

संगठनों द्वारा की जाने वाली समर्पित सेवा से लाभान्वित समाज को देखते हुए समाज के उदारमना सदस्यों ने सेवा कार्यों को संचालित रखने के लिए खुले हृदय से संगठनों को आर्थिक सहयोग प्रदान किया। फलत: संगठन निष्काम सेवा पथ पर गतिमान रहे और आज भी हैं।

समय परिवर्तनशील है। समय के परिवर्तन के साथ–साथ सामाजिक मापदण्ड बदलते रहे हैं। यह एक शाश्वत प्रक्रिया है। इसके कारण या प्रवाह में अथवा प्रभाव में मानव की सोच में परिवर्तन आना स्वाभाविक है। सोच का परिवर्तन उलट धारा में चलने लगा तो उसने सामाजिक सदस्यों की सोच को परहित की बजाय स्वहित की सोचने तक सीमित कर दिया। समाज के उदारमना सदस्यों द्वारा सामाजिक संगठनों को प्रदान किया जानेवाला आर्थिक अनुदान और आधार को चंदे की संज्ञा दे दी गई। चंदा भी फिर चंदा न रह कर धन्धा बन गया। जिसके वशीभूत नित नये सामाजिक व धार्मिक संगठनों का समाज में गठन होने लगा, चंदा उगाही होने लगी। चंदे की उगाही में सामाजिक भावना लोप होती गई इस कार्य में व्यक्तिगत, पारिवारिक एवं व्यावसायिक सम्बन्धों का आधार लिया जाने लगा। जो जितना अधिक चंदा इकठ्ठा करे वह संगठन में उतना ही ऊंचा पद पाये का रिवाज तो चला ही साथ ही सेवा के नाम पर समाज से लिए गये (बल्कि ये कहूं वसूले गये) पैसों का भरपूर दुरुपयोग होने लगा। संगठन में कुर्सी की लड़ाई शुरु हो गई। एक वाक्य में कहूं तो चंदा बना धन्धा तो सेवा कार्य हुआ मंदा। समाज सेवा के नाम पर स्वहित के संचालित किये जा रहे ऐसे संगठनों की स्वार्थपूर्ण भावनाओं के कारण समाज सेवा जैसी लोक हितकारी भावना प्रश्नवाचक में घिरती जा रही है।

हमें अब गंभीरता पूर्वक इस सन्दर्भ में सोचना चाहिए क्योंकि जो संगठन लम्बे समय से समाज के लिए नि:स्वार्थ भावना से कार्य करते आ रहे हैं उन पर भी इस प्रश्नवाचक ने प्रभावित किया है। आर्थिक योगदान प्राप्ति के पक्ष में वे शनै: शनै: कमजोर होते जा रहै हैं। समाजोत्थान के लिए बनाई गई उनकी योजनाएं अर्थाभाव के कारण पूर्णता तक नहीं पहुंच पाती और अगर पहुंचती भी है तो यथा समय नहीं पहुंच पाती, जिसके कारण समाज के सदस्यों पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। आज इस पक्ष में भी सामाजिक जागरूकता लानी जरूरी है। मेरे कहने का तत्पर्य यह नहीं हैं कि समाज में हुए नये संगठन बंद कर दिये जाने चाहिए। नहीं मेरा आशय यह बिल्कुल नहीं है। मैं तो केवल यह बताना चाहता हूं कि दिशा गलत हो तो दशा खराब होती है। हमें आज समाज सेवा की दशा और दिशा को ठीक करने की आवश्यकता है। सेवा में मेवा प्राप्ति की नीति न रख कर परमानन्द की तलाश करनी है। तभी हम समाज से गहरा जुड़ाव बना सकेंगे और समाज का आत्मिक स्नेह पा सकेंगे।◆

भंवरमल सिंघी समाज सेवा पुरस्कार

अखिल भारतीय मारवाड़ी सम्मेलन के पूर्व अध्यक्ष एवं समाजसेवी स्वर्गीय भंवरमल सिंघी की स्मृति में गठित भंवरमल सिंघी समाज सेवा न्यास द्वारा समाज सुधार के क्षेत्र में विशेष योगदान के लिए स्थापित भंवरमल सिंघी समाज सेवा पुरस्कार सम्मेलन के 75 वें स्थापना दिवस के अवसर पर प्रदान किया जाएगा।

उक्त पुरस्कार हेतु प्रादेशिक सम्मेलनों, शाखा सभाओं एवं सदस्यों से 2008–2010 कार्यकाल में समाज सेवा कार्य के आधार पर उपयुक्त नाम प्रस्तावित कर केन्द्रीय कार्यालय को 25 सितम्बर 2010 तक भेजने की कृपा करें।

निर्णायक मंडल

श्री सीताराम शर्मा, श्री हरिप्रसाद बुधिया, श्री नन्दलाल रुँगटा, श्री हरिप्रसाद कानोड़िया, श्री सज्जन भजनका, श्री आत्माराम सोन्थालिया, श्री रामअवतार पोद्दार, श्री पुष्कर लाल केडिया।

संयोजक :– श्री संजय हरलालका

सीताराम रुँगटा राजस्थानी भाषा साहित्य पुरस्कार

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के पूर्व अध्यक्ष एवं बिहार प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन के पूर्व अध्यक्ष स्व0 सीतारामजी रुँगटा की स्मृति में राजस्थानी भाषा की श्रीवृद्धि एवं प्रोत्साहन हेतु राजस्थानी साहित्यकारों को देने के लिए पुरस्कार की स्थापना की गई है।

प्रादेशिक सम्मेलनों, शाखा सभाओं एवं सदस्यों से अनुरोध है कि 2008–2010 में सम्पादित साहित्य कृतियों हेतु पुरस्कार के लिए नाम प्रस्तावित कर केन्द्रीय कार्यालय को 25 सितम्बर 2010 तक भेजने की कृपा करें।

निर्णायक मंडल

श्री सीताराम शर्मा, श्री रतनलाल शाह, श्री हरिप्रसाद कानोड़िया, श्री नन्दलाल रुँगटा, श्री प्रहलाद राय अग्रवाल, श्री नथमल केड़िया, श्री जुगल किशोर जैथलिया, श्री रामअवतार पोद्दार।

संयोजक :– श्री शम्भु चौधरी

उपरोक्त पुरस्कार सम्मेलन के 75 वें स्थापना दिवस पर दिए जायेंगें।

आडम्बर और दिखावा - समाज के लिए अभिशाप
विषय पर संगोष्ठी

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन ने दी कलकत्ता ट्रामवेज कंपनी (१९७८) लिमिटेड हॉल, १२, आर. एन. मुखर्जी रोड, ४ तल्ला, कोलकाता–१ में दिनांक १५ मई २०१० को **''आडम्बर और दिखावा–समाज के लिए अभिशाप''** विषय पर संगोष्ठी आयोजित की। संगोष्ठी की अध्यक्षता सम्मेलन के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री नंदलाल रुंगटा ने की एवं विषय प्रवर्तन सम्मेलन के पूर्व अध्यक्ष श्री मोहन लाल तुलस्यान ने किया। गोष्ठी के मुख्य वक्ता श्री पुष्कर लाल केडिया और श्री जुगल किशोर जैथलिया थे। सम्मेलन के राष्ट्रीय महामंत्री श्री रामअवतार पोद्दार और राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष श्री आत्माराम सोंथलिया भी गोष्ठी में मौजूद थे।

सभापति श्री रुंगटा ने कहा कि समाज में व्याप्त कुरीतियों को मिटाने के लिए सम्मेलन के बैनर तले समय–समय पर गोष्ठी आयोजित की जाती है। आपने कहा कि जन्म से मृत्यु काल तक हमलोग आडम्बर में डूबे रहते हैं। आडम्बर और दिखावा रूपी कुरीतियों से निजात पाने के लिए आपने व्यक्तिगत और सामूहिक पहल करने की बात कही। आपने कहा कि सकारात्मक सोच रखकर इससे छूटकारा पा सकते हैं। मारवाड़ी युवा मंच और मारवाड़ी युवा महिला संगठन से आपने इन कुरीतियों के खिलाफ समाज में जागरूकता लाने का आग्रह किया। आपने कहा कि बारात के स्वागत और खान–पान पर हमलोग फिजूलखर्च करते हैं जो एक तरह की सामाजिक कुरीति ही है। समाज के उच्च, अभिजात वर्ग से आग्रह करते हुए आपने कहा कि सामाजिक कुरीतियों के उन्मूलन में उन सभी का भी सहयोग चाहिए। अ.भा.मा.स. के बारे में आपने कहा कि यह संगठन समाज से कुरीतियों को मिटाने के लिए प्रतिबद्ध है।

राष्ट्रीय महामंत्री श्री रामअवतार पोद्दार ने कहा कि हमारे समाज में दिनोंदिन आडम्बर और दिखावे की प्रवृत्ति में वृद्धि होती जा रही है जो समाज के लिए घातक है। आपने कहा कि धार्मिक आयोजन जो सादगी से मनाया जाना चाहिए वहां भी हमलोग अनावश्यक खर्च कर देते हैं। समाज इस कुरीति को मिटाने के लिए दृढ़ संकल्प हो।

सम्मेलन के पूर्व अध्यक्ष श्री मोहनलाल तुलस्यान ने कहा कि हमारे पूर्वज संचय प्रवृत्ति के थे जिसके कारण हमलोग उन्नति करते चले गए किंतु आज स्थिति विपरीत हो गई है। समाज अपनी संचय प्रवृत्ति को छोड़कर आडम्बर और दिखावे के चंगुल में फंस चुका है जिससे समाज खोखला होता जा रहा है। शादी विवाह, जन्मदिन के अवसर पर फिजूलखर्ची को अनावश्यक करार देते

हुए उन्होंने कहा कि हमलोग सम्मिलित प्रयास से इसपर रोक लगाएं। शादी और जन्मदिन के अवसर पर महंगे आमंत्रण कार्ड बाटे जाने पर आपने चिंता जाहिर की। उन्होंने कहा कि फिजूलखर्ची रोकना भी समाज सेवा की श्रेणी में ही आता है। आडंबर और दिखावा वाकई समाज के लिए संगीन है अत: हमलोगों को उसका प्रतिरोध करना ही चाहिए।

गोष्ठी में वक्ता श्री जुगल किशोर जैथलिया ने आडम्बर और दिखावा शब्द को पर्यायवाची करार दिया। महापुरुषों के जीवन से नसीहत लेने की चर्चा करते हुए उन्होंने कहा कि हमें महापुरुषों के चरित्र को सामने रखकर चरित्र का गठन करना चाहिए तथा महान उद्देश्य को सामने रखकर जीना चाहिए। समाज के संस्कारित लोगों से कुप्रथा को मिटाने में योगदान देने का आग्रह उन्होंने किया। पश्चिमी सभ्यता की विकट होड़ से बचने का आग्रह करते हुए उन्होंने कहा कि यदि हमलोग पाश्चात्य सभ्यता की अंधानुकरण से नहीं बचें तो हमारा विनाश सुनिश्चित है। विवाह समारोह भारतीय तौर–तरीके से किये जाने का विचार उन्होंने गोष्ठी में रखा। उन्होंने कहा कि समाज संस्कारवान तभी बना रहेगा जब हमलोग सत्संग, प्रार्थना करेंगे। समाज में संवेदनशीलता की कमी के बारे में उन्होंने कहा कि साहित्य का पठन–पाठन नहीं होने से समाज की संवेदना मरती जा रही है।

वक्ता श्री पुष्कर लाल केडिया ने कहा कि यह संगोष्ठी कम आंदोलन ज्यादा है। समाज में विवाह, जन्मदिन इत्यादि के मौके पर फिजूलखर्ची पर चिंता प्रकट करते हुए उन्होंने कहा कि इसे रोकने के लिए हमलोग आन्दोलन चलाएं। धार्मिक आयोजनों में हो रहे अनावश्यक खर्च को उन्होंने अनुचित करार दिया। उन्होंने कहा कि हमारे समाज का गुण संचय प्रवृत्ति थी किंतु आज लोग उसे भूलते जा रहे हैं। छात्रों को निबंध, रेखाचित्र, वाद–विवाद प्रतियोगिता के माध्यम सामाजिक कुरीतियों के बारे में जागरूक करने की मंशा उन्होंने जाहिर की। उन्होंने कहा कि राज्य शाखा केन्द्रीय शाखा को साथ लेकर सामाजिक कुरीतियों के खिलाफ मुहिम छेड़े।

गोष्ठी में विचार रखते हुए श्री नन्दलाल सिंघानियां ने कहा कि तलाक और परिवार में बिखराव भी आडंबर और दिखावा से ही जुड़ा है।

श्री ओम लडिया ने कहा कि आडंबर और दिखावा बिल्कुल हमारे समाज की सामयिक समस्या है। उन्होंने कहा कि इसके पोषक भी हमलोग ही हैं अत: इसका सुधार भी हमें ही करना होगा। श्री अरुण मल्लावत ने कहा कि पुरानी पीढ़ी नयी पीढ़ी को इस तरह की गोष्ठी में शरीक करें ताकि उन लोगों में इसके बारे में जागरूकता उत्पन्न हो।

गोष्ठी का संचालन श्री प्रदीप जीवराजका तथा धन्यवाद ज्ञापन श्री कैलाश पति तोदी ने किया।

अंत में आचार्य महाप्रज्ञ और पूर्व उपराष्ट्रपति श्री भैरोसिंह शेखावत के निधन पर एक मिनट का मौन रखा गया।◆

स्थायी समिति के सदस्यों की षष्ठम बैठक

(7 जून 2010 को संपन्न)

कई प्रस्तावों पर चर्चा :

सभा को सम्बोधित करते हुए सम्मेलन सभापति श्री नन्दलाल रुँगटा

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन की स्थायी समिति के सदस्यों की षष्ठम बैठक सोमवार ७ जून २०१० को सम्मेलन के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री नन्दलाल रुंगटा की अध्यक्षता में एक्सप्रेस टावर, ४२ए, शेक्सपियर सारणी, ८वां तल्ला, कोलकाता–१७ में संपन्न हुई। बैठक में श्री नन्दलाल रुंगटा, श्री सीताराम शर्मा, श्री रामअवतार पोद्दार, श्री आत्माराम सोंथलिया, श्री संजय हरलालका, श्री विजय गुजरवासिया, श्री घनश्याम शर्मा, श्री ओम लडिया, श्री विश्वनाथ सराफ, श्री जुगल किशोर जैथलिया, श्री गोविन्द प्रसाद शर्मा, श्री रामनिवास चोटिया, श्री के. के. डोकानिया, श्री रविन्द्र लडिया मौजूद थे।

बैठक की शुरुआत करते हुए सम्मेलन के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री नन्दलाल रुंगटा ने कहा कि सम्मेलन की सारी गतिविधियां समाज विकास में प्रकाशित होती रहती हैं। आपने कहा कि सम्मेलन के १९३५ से अबतक के भूतपूर्व अध्यक्षों और महामंत्रियों की तस्वीर एक ही तरह के फ्रेम में मढ़वाकर सम्मेलन कार्यालय में लगाने का जो निर्णय लिया गया था वह कार्यालय की मरम्मत रूक जाने के कारण अभी शिथिल है। सम्मेलन की वेबसाइट बनाये जाने के बारे में आपने कहा कि यह कार्य अभी पूरा नहीं हो पाया है। आदर्श विवाह को प्रोत्साहित करने के बारे में आपने कहा कि समाज विकास में इस विषय पर लेख प्रकाशित हो। कौस्तुभ जयंती के अवसर पर महामहिम राष्ट्रपति को बुलाये जाने के मद्देनजर आपने कहा कि महामहिम का आना अभी तय नहीं हुआ है। कौस्तुभ जयंती के मौके पर डाक टिकट जारी किये जाने के बारे में आपने कहा कि संबंधित विभाग को इस बारे में पत्र भेजा गया है, दूसरी बार भी पत्र भेजा जाएगा।

वर्तमान सदस्यता पर चिंता जाहिर करते हुए आपने कहा कि जिस संख्या में सदस्य सम्मेलन से जुड़ने चाहिए वह नहीं जुड़े हैं। पूरे भारतवर्ष में समाज के सिर्फ १२७ व्यक्ति के संरक्षक सदस्य के रूप में सम्मेलन से जुड़ने पर आपने चिंता जाहिर की। आपने सदस्यता अभियान को धीमा करार देते हुए कहा कि सदस्य सम्मेलन की रीढ़ हैं अत: संगठन तभी और मजबूत होगा जब नये सदस्य सम्मेलन से जुड़ेंगे। अमहर्स्ट स्ट्रीट स्थित सम्मेलन भवन निर्माण के बारे में आपने कहा कि एमलगेशन का काम पूरा हो गया है किंतु म्यूटेशन का काम अभी बाकी है।

विवाह समारोह के मद्देनजर आपने कहा कि सामूहिक विवाह, वैवाहिक परिचय सम्मेलन और आदर्श विवाह समाज में जरूर हो किंतु तरजीह आदर्श विवाह को ही दें। पश्चिम बंगाल प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन की आर्थिक अभावग्रस्त जोड़े को एक लाख रुपये तक देने के निर्णय का आपने भूरि – भूरि प्रशंसा की तथा प्रांत के अध्यक्ष श्री विजय गुजरवासिया से आग्रह किया कि आदर्श विवाह करनेवाले जोड़े को भी एक लाख रुपये तक की राशि देने पर विचार करें। समाज के धनी वर्ग से अपने पुत्र – पुत्री की सामूहिक शादी करने का आग्रह

करते हुए आपने कहा कि वे लोग यदि ऐसा करेंगे तो समाज के लिए अनुकरणीय रहेगा। सामूहिक विवाह और परिचय सम्मेलन को आपने विवाह का कारगर तरीका बताया साथ ही कहा कि सादगीपूर्ण आदर्श विवाह को हमलोग ज्यादा तरजीह दें। सीताराम रुंगटा राजस्थानी भाषा साहित्य पुरस्कार के बारे में आपने कहा कि अब प्रत्येक साल स्थापना दिवस के मौके पर राजस्थानी भाषा के उत्कृष्ट रचनाकार को २१ हजार रुपये का पुरस्कार दिया जाएगा। पहले यह पुरस्कार ११ हजार रुपये का था जो कि दो वर्ष के अंतराल पर दिया जाता था। आपने कहा कि इस हेतु पहले से बैंक में जमा एक लाख रुपयों में चार लाख रुपये और उनकी तरफ से दिए गए हैं जिसको मिलाकर ५ लाख रुपये फिक्सड डिपाजिट कराने का इरादा है तथा इससे होनेवाली ब्याज रूपी आय से पुरस्कार राशि एवं सम्मानित व्यक्ति के रहने व आने जाने का खर्च किया जाएगा। आपने कहा कि सम्मेलन का उद्देश्य समरसता भी है और उस भाव को बरकरार रखते हुए बंगला भाषी साहित्यकार को भी पुरस्कृत करने की योजना है।

अलग–अलग सदस्यता की चर्चा करते हुए आपने कहा कि यह समस्या सभी प्रांतों में है, इस पर संविधान संशोधन कमेटी कार्य कर रही हैं। एकल सदस्यता के बारे में आपने कहा कि इस पर गंभीरता से विचार चल रहा है किंतु जो लोग आर्थिक रूप से संपन्न हैं वे प्रांत एवं अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन दोनों जगह की सदस्यता लेने में सक्षम हैं। सामाजिक कुरीतियों को जड़ से मिटाने की चर्चा करते हुए आपने कहा कि कुरीतियां एक तरह का सामाजिक रोग है जिसका उन्मूलन हमलोगों को करना पड़ेगा। मारवाड़ी युवा मंच, मारवाड़ी महिला मंच और सम्मेलन की प्रांतीय शाखा तीनों संगठनों की संयुक्त कार्यशाला आयोजित करने की चर्चा करते हुए आपने की तथा कहा कि इस तरह के वर्कशॉप से वैचारिक आदान–प्रदान तो होंगे ही साथ ही कार्यात्मक संबंध भी बनेंगे। आपने स्थायी समिति के सदस्यों से सम्मेलन कार्यालय १० मिनट के लिए मुआयना हेतु जाने का आग्रह किया।

सम्मेलन के राष्ट्रीय महामंत्री श्री रामअवतार पोद्दार ने महामंत्री की रिपोर्ट पढ़ी और अपना स्पष्टीकरण दिया। सम्मेलन के राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष श्री आत्माराम सोंथलिया ने आय – व्यय का लेखा जोखा प्रस्तुत किया।

श्री विजय गुजरवासिया ने कहा कि सामूहिक विवाह के आयोजन में वर तो आते हैं किंतु वधू नहीं आती। उन्होंने बताया कि पश्चिम बंगाल प्रांतीय मारवाड़ी सम्मेलन सामूहिक विवाह, एकल विवाह करनेवाले जरूरतमंद जोड़े को एक लाख रुपये देने का निर्णय लिया है। श्री सीताराम शर्मा ने कहा कि सामूहिक विवाह में दिक्कत आती है अत: परिचय सम्मेलन करवाइए। श्री संजय हरलालका ने कहा कि परिचय सम्मेलन में लड़कियों की संख्या अत्यंत कम होती है जिससे परिचय सम्मेलन सार्थक नहीं हो पा रहे हैं। परिचय सम्मेलन करने के पहले हमें इस दिशा में भी सोचना चाहिए। श्री ओम लडिया ने कहा कि हमलोग आदर्श विवाह को ही प्रश्रय दें। उन्होंने कहा कि कोलकाता में आदर्श विवाह के लिए एक जगह निश्चित हो तथा सम्मेलन इस दिशा में सार्थक पहल करे। श्री के. के. डोकानिया ने कहा कि जमीनी स्तर पर भी इस तरह का कार्य हो। कोलकाता में विवाह करना काफी खर्चीला है। विवाह कार्य में दलाल सक्रिय हैं। श्री जुगल किशोर जैथलिया ने कहा कि समाज के युवक–युवतियों के विवाह हेतु सम्मेलन एक फैलिसिटेड एजेंसी की तरह काम करे। श्री गोविंद शर्मा ने कहा कि सम्मेलन समाज की प्रतिनिधि संस्था है अत: रास्ता दिखाए। उन्होंने कहा कि कार्य को अंजाम देने के लिए हमलोगों को साहसी होना पड़ेगा। श्री रामअवतार पोद्दार ने कहा कि समाज सुधार निरंतर चलनेवाली प्रक्रिया है। मृतक भोज, पर्दा–प्रथा, बालिका शिक्षा और अन्य सामाजिक कुरीतियां सम्मेलन के सक्रिय हस्तक्षेप से कम हुई हैं। सम्मेलन का कार्य सामाजिक सुधारों हेतु निरन्तर प्रयास करते रहना है।◆

महामंत्री की रिपोर्ट

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन की स्थायी समिति के सभी सम्मानित सदस्यों का मैं समिति की षष्ठम बैठक में हार्दिक स्वागत करता हूँ। स्थायी समिति की वर्तमान सत्र की पंचम बैठक सोमवार, १८ जनवरी २०१० को सम्मेलन के कोलकाता स्थित केन्द्रीय कार्यालय में सम्पन्न हुई थी। उसके बाद हुए सम्मेलन के संक्षिप्त कार्यों की जानकारी यहां प्रस्तुत कर रहा हूँ।

१९ जनवरी २०१० को राष्ट्रीय अध्यक्ष के कोलकाता स्थित कार्यालय में राजस्थानी भाषा सब कमेटी की बैठक कमेटी के चैयरमेन श्री रतन शाह की अध्यक्षता में हुई।

गणतंत्र दिवस पर सम्मेलन भवन में राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री सीताराम शर्मा ने झंडोत्तोलन किया।

३१ जनवरी २०१० को मारवाड़ी सम्मेलन एवं मारवाड़ी सम्मेलन फाउण्डेशन की तरफ से कोलकाता के टेंगरा के खाल धार बस्ती के पास विगत दिनों लगी आग से बेघर हुए १२५ परिवारों के बीच खाना बनाने का स्टोव वितरित किया गाय। इस मौके पर सांसद सुदीप बंदोपाध्याय ने कहा कि सम्मेलन ने बेघर हुए लोगों की सहायता हेतु हाथ बढ़ाकर सराहनीय कार्य किया है। श्री सीताराम शर्मा ने कहा कि सम्मेलन ने बिहार की बाढ़ हो या पश्चिम का आयला तूफान सब समय सहायता का हाथ बढ़ाया है।

३०–३१ जनवरी को झारखण्ड प्रांतीय मारवाड़ी सम्मेलन का चतुर्थ अधिवेशन रांची स्थित मारवाड़ी भवन में सम्पन्न हुआ जिसका उद्घाटन झारखण्ड के मुख्यमंत्री श्री शिबू सोरेन ने किया।

सम्मेलन के कौस्तुभ जयंती समारोह कमेटी की प्रथम बैठक ५ फरवरी २०१० को बंगाल रोईंग क्लब में हुई। बैठक की अध्यक्षता करते हुए कमेटी के अध्यक्ष श्री सीताराम शर्मा ने बताया कि इस वर्ष पूरे देश में कार्यक्रम आयोजित करने की योजना है। उन्होंने बताया कि कोलकाता के आमहर्स्ट स्ट्रीट स्थित सम्मेलन भवन के शिलान्यास, ७५ जोड़ों का सामूहिक विवाह, ७५ जरूरतमंद छात्रों को छात्रवृत्ति, शिक्षा, खेल, समाजसेवा, लेखन आदि क्षेत्र में ख्याति अर्जित करने वाले देश के पांच व्यक्तियों को सम्मानित करने की योजना है। इसके अलावा कोलकाता में आयोजित कार्यक्रम में राष्ट्रपति श्रीमती प्रतिभा पाटिल को आमंत्रित किया जा रहा है। आपने बताया कि इस वर्ष गुजरात, सिक्किम, हिमाचल प्रदेश तथा उत्तरांचल प्रांत का गठन करने की दिशा में कदम उठाये जा रहे हैं तथा पूरे देश में ७५०० नये सदस्य बनाने हेतु सदस्यता अभियान चल रहा है। इस वर्ष सम्मेलन के ७५ वर्षों का इतिहास पुस्तकाकार रूप में प्रकाशित करने की योजना है तथा भारत सरकार से अनुरोध किया जायेगा कि इस मौके पर वह डाक टिकट जारी करे। राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री नन्दलाल रूँगटा ने कहा कि सम्मेलन की अपनी वेबसाईट शुरू की जायेगी जिसमें सम्मेलन से सम्बन्धी समस्त जानकारियों का समावेश होगा।

६ फरवरी को पूर्व केन्द्रीय मंत्री, राज्यसभा के पूर्व उपाध्यक्ष तथा मारवाड़ी सम्मेलन के हितैषी श्री रामनिवास मिर्धा के निधन पर शोक सभा का आयोजन मर्चेन्ट चेम्बर ऑफ हाल, कोलकाता में किया गया। शोक सभा की अध्यक्षता श्री नन्दलाल रूँगटा ने की।

७ फरवरी को पश्चिम बंग प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन का दशम् अधिवेशन महाजाति सदन के एनेक्सी हॉल में सम्पन्न हुआ जिसमें नवनिर्वाचित अध्यक्ष श्री विजय गुजरवासिया ने पद भार ग्रहण किया।

सम्मेलन द्वारा सामाजिक कुरीतियां दूर करने एवं समाज में जागरूकता लाने के उद्देश्य से आयोजित कार्यक्रमों की श्रृंखला में २० फरवरी २०१० को दी कलकत्ता ट्रामवेज कम्पनी हॉल में **''बढ़ते तलाक–चिंता एवं चिंतन''** विषय पर आयोजित संगोष्ठी में एक स्वर में यह बात उभर कर आई कि युवा पीढ़ी में सहनशीलता की कमी की वजह से तलाक बढ़ रहे हैं। सम्मेलन के पूर्व अध्यक्ष श्री सीताराम शर्मा ने अध्यक्षता करते हुए कहा कि तलाक के लिए एक ओर जहां पारिवारिक व सामाजिक कारण जिम्मेवार हैं वहीं युवा पीढ़ी में सहनशीलता का ह्रास होना एक मुख्य कारण है। उन्होंन कहा कि संयुक्त परिवार रहने से सहन करने की शक्ति आती है। किन्तु आजकल एकल परिवार हो गये हैं जहां छोटी सी बात पर सहन शक्ति जवाब दे देती है और नौबत तलाक की आ जाती है। उन्होंने कहा कि तलाक रोकने हेतु न्यायपालिका ने तो कदम उठाने शुरू कर दिये हैं। तलाक

को अंतिम विकल्प बताते हुए आपने कहा कि मारवाड़ी सम्मेलन कार्य अपनी खामियों पर चिंतन करना है।

रविवार, २८ मार्च को चैम्बर भवन, बिष्टुपुर, जमशेदपुर, झारखण्ड में सम्मेलन की सर्वोच्च नीति निर्धारण समिति अखिल भारती समिति की बैठक हुई जिसमें अध्यक्ष महोदय ने विवाह समारोह में बढ़ रही फिजूलखर्ची, मद्यपान, नाच–गान, तलाक, परिवार में हो रहे बिखराव जैसी सामाजिक समस्याओं को समाज के साझा प्रयास से रोकने का आग्रह किया। आपने हमारे पूर्वजों द्वारा बनाई गई गोशाला, अस्पताल, धर्मशालाओं की दुर्दशा का जिक्र करते हुए कहा कि आज इन्हें बचाने की जरूरत है।

सम्मेलन की डायरेक्टरी उपसमिति की बैठक २३ अप्रैल को राष्ट्रीय अध्यक्ष के कोलकाता स्थित कार्यालय में हुई जिसमें समिति के चैयरमेन श्री रविन्द्र लढिया ने बताया कि जून माह में नई डायरेक्टरी प्रकाशित हो जायेगी।

सम्मेलन की राष्ट्रीय कार्यकारिणी की पंचम बैठक २४ अप्रैल २०१० को हिन्दुस्तान क्लब में हुई जिसकी अध्यक्षता राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री नन्दलाल रुंगटा ने की। बैठक में सर्वसम्मति से सम्मेलन का उच्च शिक्षा कोष गठित करने का निर्णय लिया गया। १० लाख रुपये से बनने वाले इस कोष हेतु हरदम यह प्रयास रहेगा कि कोष की राशि इससे कम न हो। इसके अलावा श्री रतन शाह के सुझाव पर सम्मेलन के प्रांतों, जिलों एवं शाखाओं के माध्यम से मारवाड़ियों की जनगणना कराने का भी निर्णय लिया गया। इस हेतु सभी प्रांतों को पत्र भेज दिया गया है। चार माह के भीतर इस कार्य को बखूबी अंजाम देने वाले प्रांतों, जिलों एवं शाखाओं को सम्मेलन के कौस्तुभ जयंती वर्ष में ही सम्मानित भी किया जायेगा।

सम्मेलन द्वारा शनिवार १५ मई २०१० को **आडम्बर और दिखावा–समाज के लिए अभिशाप** विषय पर संगोष्ठी का आयोजन दी कलकत्ता ट्रामवेज कंपनी (१९७८) लिमिटेड हॉल, १२, आर. एन. मुखर्जी रोड में किया गया। संगोष्ठी की अध्यक्षता सम्मेलन के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री नंदलाल रुंगटा ने की। उन्होंने अपने संबोधित में कहा कि सम्मेलन के बैनर तले समय–समय पर सामाजिक विषयों पर संगोष्ठियां आयोजित की जाती हैं। जिसका मकसद लोगों को सही राह दिखाना होता है। इस मौके पर पुष्करलाल केडिया, जुगलकिशोर जैथलिया, मोहनलाल तुलस्यान के अलावा सम्मेलन के राष्ट्रीय महामंत्री रामअवतार पोद्दार, राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष आत्माराम सोंथलिया ने भी वक्तव्य रखा। वक्ताओं ने कहा कि यह दुखद है कि युवा पीढ़ी पश्चिम की तरफ बढ़ती जा रही है। इन लोगों ने उदाहरण देते हुए कहा कि सूर्य भी जब पश्चिम की तरफ बढ़ता है तो उसे अस्त होना पड़ता है। इसलिए अगर अस्त (समाप्त) होने से बचना है तो पश्चिम की तरफ बढ़ते कदम को रोकना होगा।

सम्मेलन द्वारा प्रत्येक दो वर्ष में दिया जाने वाला ११,००० रु. की राशि वाला राजस्थानी भाषा साहित्य पुरस्कार, जो कि स्व. सीताराम रुंगटा के नाम पर दिया जाता है, अब प्रत्येक वर्ष स्थापना दिवस समारोह पर दिया जायेगा। इसके लिए पहले से एक लाख की राशि फिक्स डिपाजिट थी। अध्यक्ष श्री नन्दलाल रुँगटा ने अपने पूज्य पिताजी के नाम पर दिये जाने वाले इस सम्मान हेतु और ४ लाख रुपये दिये सम्मेलन को दिये हैं जिन्हें भी फिक्स डिपाजिट कराया जा रहा है। अब से सम्मान की राशि बढाकर २१००० रु. कर दी गई है। इसके साथ ही सम्मानित व्यक्ति के आने–जाने का भाड़ा, रहने आदि का खर्च फिक्स डिपाजिट से प्राप्त ब्याज की राशि से हो जायेगा।

सम्मेलन को आयकर की धारा ८०जी का प्रमाणपत्र मिल गया है।

आपको बताते हुए प्रसन्नता हो रही है कि पहली बार सम्मेलन के सभी संरक्षक एवं आजीवन सदस्यों को सम्मेलन के प्रतीक चिन्ह (लेपल पिन) देने की जो बात अध्यक्ष ने स्थायी समिति की बैठक में कही थी वे लेपल पिन बनकर आ गये हैं जिन्हें शीघ्र ही सभी सदस्यों को भेजा जायेगा। इसके अलावा सभी संरक्षक व आजीवन सदस्यों को पहली बार सदस्यता प्रमाण पत्र देने का प्रयास भी किया जा रहा है। अभी हाल में ही सम्पन्न हुए कोलकाता नगर निगम चुनाव में मारवाड़ी समाज की मीनादेवी पुरोहित, सुनीता झंवर, श्वेता इंदोरिया तथा विजय ओझा ने जीत दर्ज कर समाज का गौरव बढ़ाया है। सम्मेलन पश्चिम बंग प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन से अनुरोध करता है कि वे इन पार्षदों का अभिनन्दन करें ताकि अधिक से अधिक समाज के लोगों की रूचि राजनीति की ओर हो।

हमारा लक्ष्य कौस्तुभ जयंती वर्ष में ७५०० नये सदस्य बनाने का है जिसमें आप सबका सहयोग चाहिए।◆

''धरती धोरां री'' गीत के अमर रचयिता

महाकवि कन्हैयालाल सेठिया

का सम्पूर्ण साहित्य

सुलभ मूल्य पर प्राप्त करें

1) कन्हैयालाल सेठिया समग्र (राजस्थानी)

पृष्ठ 704 (सजिल्द) मूल्य 600/–

(सेठियाजी के सभी १४ राजस्थानी ग्रन्थ एवं कतिपय अप्रकाशित रचनायें एक ही जिल्द में)

2) कन्हैयालाल सेठिया समग्र (हिन्दी–1)

पृष्ठ 704 (सजिल्द) मूल्य 600/–

(१९३६ ई० से १९७५ ई० तक रचित वनफूल से अनाम तक १० हिन्दी ग्रन्थ)

3) कन्हैयालाल सेठिया समग्र (हिन्दी–2)

पृष्ठ 720 (सजिल्द) मूल्य 600/–

(१९७६ ई० से २००५ ई० तक रचित निर्ग्रन्थ से त्रयी तक ८ हिन्दी एवं ताजमहल तथा गुलचीं दो उर्दू ग्रंथ)

4) कन्हैयालाल सेठिया समग्र–4 (अनुवाद खंड)

पृष्ठ 784 (सजिल्द) मूल्य 700/–

सेठियाजी की रचनाओं का अंग्रेजी एवं अन्य भारतीय भाषाओं में अनुवाद (साथ में मूल रचना भी)।

5) कन्हैयालाल सेठिया – चुनी हुई कविताएँ

पृष्ठ 116 मूल्य 100/–

(सेठियाजी की राजस्थानी एवं हिन्दी की प्रतिनिधि रचनाएँ)

:: सह सम्पादक ::

महावीर प्रसाद बजाज

09830063052

:: सम्पादक ::

जुगलकिशोर जैथलिया

09830341747

(सभी ग्रन्थों को एक साथ मँगाने पर ३०% विशेष छूट, डाक व्यय अतिरिक्त)

❑❑❑

:: प्रकाशक ::

राजस्थान परिषद

2–बी, नन्दो मल्लिक लेन, कोलकाता–700006

दूरभाष (033) 25306074

(राजस्थान परिषद के नाम से कोलकाता के किसी बैंक पर ड्राफ्ट के साथ अपना आदेश भेजें या परिषद के स्टेट बैंक ऑफ इंडिया के बचत खाता नं. 11135277311 में जमा करा कर सूचित करें)

हमारी नदियां गन्दे नाले बन रही है

– त्रिलोकी दास खण्डेलवाल, मानद महासचिव
सोशल सिक्यूरिटी फाउंडेशन, जयपुर

पानी, पर्यावरण और जलवायु हमारी इक्कीसवीं शताब्दी के पहले दशक की विकराल समस्यायें हैं। सारा संसार कोपनहेगन में एकत्रित होकर प्रकृति के कोप के कारण हाहाकर कर रहा है और जलवायु परिवर्तन को पर्यावरण बचाने और जल स्त्रोतो को बढ़ाने की दृष्टि से नई टैक्नोलोजी की खोज पर एक मत है। पृथ्वी, आकाश और समुद्र तीनों ही को हमारे विकास ने प्रदूषित कर दिया है और विकसित तथा विकासशील दोनों ही प्रकार के राष्ट्र **''लिमिटस ऑफ ग्रोथ''** की जगह अब लिमिटस टू ग्रोथ पर बहस कर रहे हैं। शायद एटम बम का खतरा अब उतना भयानक नहीं लगता जितना कि ''पाल्युटेड प्लेनेट'' की यह संभावना कि कुछ दशकों बाद .यहां जो भी सांस लेगा, वह संक्रमित होकर बीमार हो जायेगा। समुद्र तटों से जो मछलियां चुनकर लाई जायेगी व मरी हुई होगी या उनको खाने वाले कुछ घंटो में चल बसेंगे। जमीन का जहर पशु, पक्षी, पौधे तथा वनस्पति को इतना प्रदूषित और विषाक्त बना देगा कि जब तक हमारे वैज्ञानिक इस प्रगति का कोई दूसरा विकल्प नहीं ढूंढ लेते, हमारी सभ्यता का यह वैश्विक संकट हमें भारी त्रासदी में धकेलने जा रहा है।

एक प्रायद्वीप के रूप में भारत की सीमायें तीनों ओर से समुद्रों से घिरी है। दर्जनों नदियों के जल से सिंचित हमारा यह भूभाग मानसून की वर्षा से एक खेतिहर प्रदेश रहा है। गंगा और सिंध जैसी नदियाँ हमारे गंगा सिंध के मैदान को हरा भरा रखती है। पांच नदियों का पंजाब और ब्रह्मपुत्र के अथाह जल से लहलहाता हमारा उत्तर पूर्व प्राकृति संसाधनों की विपुलता से हमें एक सम्पन्न राष्ट्र बनाता है। दक्षिण की कृष्णा, गोदावरी, कावेरी हमारे प्रदेशों की जीवन रेखायें है और विध्यांचल को हरियाली बांटने वाली हमारी नर्मदा, ताप्ती और माही केवल पानी और वनस्पति ही नही देती, वरन् फल, फूल, जंगल वन सम्पदा और धन धान्य से पूरे देश को आपूर्ति कर एक ऐसा राष्ट्र बनाती है जो वैश्विक प्रदूषण के बावजूद भी एक खुशहाल और समृद्ध खेतिहर राष्ट्र बना रह सकता है।

यह एक ऐतिहासिक सत्य है कि संसार की सभी सभ्यतायें नदियों के तटों पर विकसित हुई है। भारत में सिन्धु नदी की सभ्यता और गंगा तट की सभ्यताओं ने पूरे संसार को वह आध्यात्मिक संस्कृति दी है जिस पर हमारी पीढ़ियां सदा सर्वदा गर्व करती रहेंगी। पतित पावनी भागीरथी, यमुना के पुलिनों की कृष्ण लीलायें, ब्रह्मपुत्र की अहोम सभ्यता और कावेरी का पानी पीकर बलिष्ठ हुई द्रविड़ सभ्यता इसके प्रमाण है, कि भारत की नदियों ने ही भारत को भारत बनाया है। यदि ये सभी नदियां अपने प्राकृति रूप में यथावत बहती रहे तो हम संसार के महानतम राष्ट्रों के साथ अपने विकास की लड़ाई लड़ते हुए आगे की पंक्ति में खड़े रह सकते हैं।

दुर्भाग्य से गत साठ वर्षों में देश के विकास की योजना बनाने वालों ने हमारी प्राकृतिक सम्पदा के दोहन के विषय में जितने प्रयास किये उतना उसके संरक्षण के विषय में नहीं सोचा। जंगल कटते गये, नदियां सूखती गई और समुद्रों की सीमायें औद्योगिक कचरे और प्रदूषण की गन्दगी से पटती चली गई। कैनाल गार्लेन्डिग की राष्ट्रीय योजना हमारी नदियों को